International Journal of Research in Social Sciences And Humanities http://www.ijrssh.com/
(IJRSSH) 2012, Vol. No. 2, Issue No. I, Jan-Mar ISSN: 2249-4642

गंगानगर जिले के घडसाना क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की प्रशासकीय, व्यक्तिगत, एवं शैक्षिक समस्याओं पर एक शोध

*निहालचंद, # डॉ0 आर.के.श्रीमाली
*षोधकर्ता
#प्रिंसिपल, स्वामी विवेकानन्द कालेज फोर प्रोफेशनल स्टडिज, सिंथल, बीकानेर

भूमिका

शिक्षा एक जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है, यह कभी समाप्त नहीं होती। यह व्यक्ति के जन्म के साथ ही आरम्भ होती है और जीवन के अन्तिम दिन तक चलती रहती है। मनुष्य जीवनभर कुछ न कुछ सीखता रहता है। शिक्षा मानव विकास का मूल आधार है। शिक्षा व्यक्ति को वास्तविक मनुष्य बनाती है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य देवतुल्य बन पाता है। शिक्षा व्यक्ति के जीवन को सामाजिक, नैतिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक रंग प्रदान करके उसे सुसंस्कृत तथा प्रगतिशील बनाती है। शिक्षा एक ऐसा प्रकाश है जो जीवन के समस्त अन्धकार को दूर करके बालक में पवित्र संस्कारों, भावनाओं, निश्चित दृष्टिकोण और भावी विचारों को जन्म देता है। जिससे बालक का समस्त जीवन प्रकाशित होता है और उसे जीवन के सही मापदण्ड का पता चलता है। शिक्षा जीवन के आदर्शों की प्राप्ति का सशक्त साधन है और मानव व्यक्तित्व के सन्तुलित एवं उचित विकास का सम्भव प्रयास है। अतः शिक्षा एक नये और उज्ज्वल समाज के विकास का आधार है।

शिक्षा का शाब्दिक अर्थः— शिक्षा शब्द का निर्माण म्कनबव से हुआ है म का अर्थ है अन्दर क्नबव का अर्थ है बाहर की ओर। अब तक भी यही विश्वास किया जाता है कि म्कनबंजपवद शब्द लेटिन भाषा के शब्द म्कनबंतम से निकला है जिस का अर्थ है 'पालन—पोषण। एक दूसरा लेटिन शब्द है म्कनबंजनउ का अर्थ है पढ़ाने अथवा प्रशिक्षण की प्रक्रिया। इस प्रकार ऐजुकेटम पढ़ने या पढ़ाने की प्रक्रिया है जो स्वयं शिक्षा का एक भाग है इसलिए ऐजुकेटम को सम्पूर्ण शिक्षा नहीं माना जा सकता।

म्कनबंतम जिसका अर्थ है विकसित करना या निकालना। भारतीय व पाश्चात्य विद्वान स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गांधी, जॉन डी.जी., फोबेल, पेस्टॉलाजी यह मानते हैं कि ज्ञान बालक में पहले से ही मौजूद है आवश्यकता है उसे बाहर की ओर निकालना या विकसित करना। फंक और वागनल आदि शिक्षा शास्त्री भी इसी शब्द से शिक्षा की उत्पति मानते हैं।

शिक्षा के प्रकार :

शिक्षा के मुख्य तीन प्रकार हैः—

1. औपचारिक

IJRSSH

2. अनौपचारिक
3. अंशोपचारिक या निरौपचारिक

1. **औपचारिक शिक्षा:–** शिक्षा की जिस नियोजित शिक्षण प्रणाली द्वारा बालक के व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है उसे औपचारिक शिक्षा कहते हैं। इस प्रकार की शिक्षा–प्रणाली का गठन किसी विशेष उद्देश्य के लिए सोच–समझकर आयोजित की जाती है। इसमें प्रत्यक्ष रूप से शिक्षण दिया जाता है। यह पूर्व नियोजित व्यवस्था है। इसमें शिक्षा विशेष संस्था में दी जाती है। जैसे– विद्यालय, पुस्तकालय, पुस्तकें, अजायबघर।
2. **अनौपचारिक शिक्षा:–** यह शिक्षा बालक के जन्म से मृत्युपर्यन्त चलती है। इस शिक्षा द्वारा बच्चा बिना किसी पूर्व योजना के स्वाभाविक ढंग से ग्रहण करता है इसके न कोई पूर्व निर्धारित उद्देश्य होते है न ही निश्चित पाठ्यक्रम, न ही कोई समय अवधि निश्चित होती है। यह आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है व्यक्ति अपने अनुभव से सीखता है। उदाहरण के लिए कोई बच्चा झूठ बोलता है तो उसे डांट पड़ती है तो वह स्वयं ही समझ जाता है और सीख जाता है कि झूठ बोलना बुरी बात है।
3. **निरौपचारिक शिक्षा:–** निरौपचारिक शिक्षा, औपचारिक शिक्षा तथा अनौपचारिक शिक्षा के बीच का रास्ता है। इस प्रकार की शिक्षा में छात्रों की ग्रहणक्षमता, स्थान व समय आदि की कोई बंदिश नहीं होती। छात्र के पास जो भी सुविधाजनक समय है। जो भी स्थान उसके लिए उपयुक्त है तथा जो भी विषय सामग्री उसकी क्षमता अनुसार है उसकी शिक्षा प्रदान की जाती है विद्यार्थी किसी भी आयु का हो, शिक्षा ग्रहण कर सकता है। इस शिक्षा के द्वारा औपचारिक व अनौपचारिक शिक्षा की कमियों को दूर किया जाता है। जो लोग शिक्षा प्राप्त करने से वंचित रह जाते है उनको निरोपचारिक शिक्षा द्वारा शिक्षित किया जाता है इसमें दूरवर्ती शिक्षा अहम भूमिका निभा रही है। अन्य रूप से दो प्रकार माने गए है:– 1. संकुचित शिक्षा व 2. विस्तृत शिक्षा।

शिक्षा का संकुचित अर्थ

इस अर्थ में शिक्षा एक पूर्व–निश्चित योजना द्वारा प्रदान की जाती है। यह शिक्षा विद्यालय या पाठशाला की चारदीवारी तक ही सीमित रहती है। विद्यार्थियों को शिक्षण विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों में दिया जाता है। शिक्षा के संकुचित रूप में आता है। इसके अनुसार बालक की शिक्षा तब आरम्भ होती है जब बालक विद्यालय में प्रवेश लेता है। यह शिक्षा उस दिन समाप्त हो जाती है जिस दिन वह अपना अध्ययन समाप्त करके विद्यालय या महाविद्यालय छोड़ देता है। इस दृष्टि से शिक्षा प्राप्त करने की एक निश्चित अवधि होती है। इस शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालक का मानसिक विकास करना है। कुछ विचारक इस शिक्षा को 3त्त्वे ;त्मंकपदहए ॅतपजपदह ंदक ।तपीउमजपबद्ध की शिक्षा भी कहते है। इस प्रकार संकुचित अर्थ में शिक्षा का अर्थ

है:– विद्यालय में दिया जाने वाला पुस्तकीय ज्ञान। मैकेन्जी के शब्दों में ''संकुचित अर्थ में शिक्षा से तात्पर्य है बालक की मानसिक शक्तियों का विकास।'' इस प्रकार संकुचित अर्थ में शिक्षा पुस्तकीय शिक्षा है जिसे अध्यापन भी कहा जाता है।

शिक्षा का विस्तृत अर्थ

विस्तृत अर्थ में शिक्षा बालक के जन्म से ही आरम्भ हो जाती है तथा उसके समस्त जीवन तक चलती रहती है। यह शिक्षा केवल 3त्रे तक ही सीमित नहीं है। उससे व्यक्ति के सभी पहलुओं का विकास होता है। इस दृष्टिकोण से शिक्षा स्कूल, शिक्षण तथा प्रशिक्षण तक ही सीमित नहीं है बल्कि बालक जीवन के समूचे अनुभवों से शिक्षा प्राप्त करता है चाहे वे अनुभव स्कूल के अन्दर हो या स्कूल के बाहर। स्कूल में यह शिक्षा कक्षा–कक्ष तक ही सीमित नहीं रहती बल्कि पुस्तकालय, प्रयोगशाला और खेल का मैदान भी इसमें आते हैं। इसके अतिरिक्त बालक घर, समुदाय और समाज में जो भी संस्कार प्राप्त करता है वह शिक्षा है। इस शिक्षा में 4भ ;भ्मंकए भ्मंतजए भ्दक ंदक भ्मंसजीद्ध शामिल है। व्यापक अर्थ में शिक्षा आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है।

शिक्षा व्यक्ति को केवल विभिन्न विषयों की सैद्धान्तिक जानकारी देने तक सीमित नहीं है। व्यक्ति अपने अनुभवों के द्वारा सीखता जाता है। इस अर्थ में शिक्षा प्राप्त करने का कोई निश्चित समय व स्थान नहीं है। जीवन के किसी भी क्षेत्र में हम जो अनुभव प्राप्त करते है, वह शिक्षा है। शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में सहायक है। इस सन्दर्भ में मार्क होपकिन कहते हैं 'विस्तृत अर्थ में शिक्षा में वह सब कुछ सम्मिलित है जिसका निर्माणकारी प्रभाव पड़ता है।' इस प्रकार व्यापक अर्थों में शिक्षा ही जीवन है और जीवन ही शिक्षा है।

शिक्षा का वास्तविक अर्थ

संकुचित और व्यापक अर्थ का समन्वय करने से शिक्षा वास्तविक रूप में एक ऐसी प्रक्रिया है जो व्यक्ति की नैसर्गिक शक्तियों का विकास करती है तथा उसे अपने वातावरण में समायोजन स्थापित करने का योगदान प्रदान करती है।

समय अनुरूप विद्वानों ने शिक्षा की अलग–अलग परिभाषाएं दी है:–

भारतीय विद्वानों के अनुसार:–

ऋग्वेद के अनुसार, ''शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो मनुष्य को आत्म निर्भर और नि:स्वार्थी बनाती है।''

उपनिषदों के अनुसार, ''शिक्षा मुक्ति का मार्ग है।''

स्वामी दयानन्द के अनुसार, ''शिक्षा चरित्र–निर्माण और सही प्रकार के जीवन का साधन है।''

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

IJRSSH

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन प्रत्येक अनुसंधान की प्रक्रिया में एक महत्त्वपूर्ण कदम है। अध्यापन की प्रवृति सभी शिक्षा शास्त्रियों एवं अनुसंधानकर्ताओं के लिए केन्द्र बिन्दु रही है। अनुसंधान को क्रियाशील एवं प्रभावपूर्ण बनाने के लिए आवश्यक है कि सम्बन्धित विषय में पहले हुए अनुसंधान कार्य का अध्ययन कर विवरण प्रस्तुत किया जाए। अनुसंधान के क्षेत्र में अपनी शोध समस्या से संबंधित साहित्य का अध्ययन नितान्त आवश्यक है। पुराने ज्ञान के आधार पर ही नए ज्ञान का सृजन हो सकता है। यही कारण है कि किसी भी सन्दर्भ में शोध करने से पहले उस क्षेत्र में हुए विगत शोध की जानकारी बहुत जरूरी है जो किसी शोध की पुनरावृति न होने देने से सहायता करता है जैसा कि **डब्ल्यू.आर. बोर्ज** ने कहा है कि किसी भी क्षेत्र का साहित्य उन आधारशिला के समान है। जिस पर सारा भावी कार्यक्रम आधारित होता है। यदि हम सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन नहीं कर लेते तो इस कार्य को पुनरावृति हो सकती है।

ऊपर लिखित बातों को ध्यान में रखते हुए चयनित शोध से संबंधी पूर्व किए गए शोधों का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित इस प्रकार से है:–

1. **टी. महापात्रा** (1991) ने उड़ीसा के कटक जिले के सरकारी व निजी माध्यमिक स्कूलों के अध्यापकों की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन किया।

इस अध्ययन के मुख्य उद्देश्य निम्न थे:–

(i) कटक कस्बों के माध्यमिक स्कूलों के सभी अध्यापकों व अलग–अलग स्कूलों को संरचना और माध्यम को जानना।

(ii) अध्यापकों के विचार, अन्त: सम्बन्ध और उनके स्कूल पाठ्य पुस्तकों व अन्य स्कूली क्रियाओं से संबंध की जानकारी पाना।

(iii) अध्यापकों की स्वतन्त्रता, आन्तरिक व बाहरी रूप में पाठ्य पुस्तकों से संबंध, पाठ्यक्रम, परीक्षा, मूल्यांकन और सूक्ष्म रूप से अनुसंधान की जानकारी प्राप्त करना।

(iv) आधुनिकीकरण और सामाजिक परिवर्तनों में अध्यापकों के योगदान को जानना।

(v) अध्यापकों की सेवा सम्बन्धी, अभिलाषा और निराशा को जानना।

(vi) उड़ीसा के निर्माण में अध्यापकों के उद्देश्यों और योगदान क्या रहा था।

इस अध्ययन द्वारा अध्यापकों से आवश्यक कार्य उपेक्षाओं व उनकी क्षमता के बारे में जानकारी हासिल की गई है। 12 स्कूलों के 200 पुरूष व 200 महिला अध्यापकों के यादृच्छिक निर्देशन लिए। इनमें से 100 अध्यापक सरकारी व 100 निजी स्कूलों से लिया गया। सर्वेक्षण व प्रश्नावली विधि द्वारा साक्षात्कार भी लिए गए। इस अध्ययन के अनुसार निष्कर्ष निकला कि:–

(i) समाज की सभी श्रेणियों में पुरूष व महिला अध्यापक पाए गए। परन्तु इनमें अधिक संख्या कमजोर व मध्यवर्ग के अध्यापकों की थी। पुरूष अध्यापकों की तुलना में ज्यादा महिला अध्यापक उच्च ;ैम्द्ध से सम्बन्धित थी।

(ii) निजी स्कूलों के अध्यापक सरकारी स्कूलों के अध्यापकों की तुलना में ज्यादा पढ़े लिखे हुए थे। निजी स्कूलों के अध्यापक उच्च शिक्षा प्राप्त होने बावजूद वे नीचे स्तर पर काम कर रहे थे क्योंकि उच्च स्तर की अवस्था का अभाव था।

(iii) कटक कस्बे में माध्यमिक स्कूलों की संख्या पर्याप्त रूप में नहीं थी इसलिए ज्यादात्तर विद्यार्थी शहरी क्षेत्रों में शिक्षा ग्रहण की मांग करते थे। सरकारी व निजी स्कूलों के शिक्षण कक्ष भी भीडभाड़ वाले तथा कक्षाओं के काफी संख्या में समूह बने हुए थे।

(iv) अगर वर्तमान शिक्षा प्रणाली पर विचार किया जाए तो 70 प्रतिशत अध्यापक मानते हैं कि इस शिक्षा प्रणाली ने अध्यापकों के सामने बेरोजगारी की समस्या उत्पन्न की है।

(v) ज्यादातर अध्यापक धर्म से जुड़ने को महत्त्व नहीं देते हैं।

(vi) अध्यापक विद्यालय के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध चाहते थे।

(vii) अध्यापकों का अभिभावक के साथ सम्बन्ध अच्छे थे।

(viii) नियुक्त अध्यापकों में ज्यादातर अध्यापक लागू पाठ्यक्रम को शिक्षा के उद्देश्यों को पूरा करने वाला नहीं मानते थे।

(ix) माध्यमिक स्कूलों में लागू पाठ्य पुस्तकों से ज्यादातर अध्यापक सन्तुष्ट नहीं थे।

2. **तरूण राजन मजूमदार** (1988) ने कलकता के माध्यमिक स्कूलों की सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली का अध्ययन किया। इस अध्ययन के उद्देश्य निम्न थेः–

स्कूलों, बच्चों, अध्यापकों, अभिभावकों, पाठ्यक्रम से संबंधित तथ्यों की कमियों को दर्शाकर वास्तविक शिक्षा–प्रणाली की वास्तविक सरंचना को प्रस्तुत करना है।

इस अध्ययन में प्राथमिक व सैकन्डरी स्रोतों से आंकड़े इक्ट्ठे किये गए। प्रमाण और लिखित प्रमाण प्राथमिक स्रोत के आंकड़े है। सही परिणाम प्राप्त करने के लिए कलकता के सभी माध्यमिक स्कूलों का सर्वेक्षण किया गया।

इस अध्ययन में पाया किः–

(i) आजादी के बाद कलकता की स्कूली शिक्षा में बहुत सारे परिवर्तन किए गए परन्तु बिना जरूरत और असावधानी के साथ किया गया। जिसका परिणाम निकला कि इच्छित उद्देश्यों और लक्ष्यों को नहीं प्राप्त किया जा सका।

(ii) पाठ्यक्रम और संगठन में परिवर्तन से बहुत सारी विभिन्नता और असुविधाएं उत्पन्न हुई।

(iii) अचानक परिवर्तन से बच्चों पर बहुत सी समस्याओं का दबाव बना।

(iv) अभिभावकों में शिक्षा में परिवर्तनों से भय और शिक्षा के प्रति असन्तोष उत्पन्न हुआ।

(v) आवश्यक जरूरतों को पूरा करने में स्कूलों का शैक्षणिक वातावरण सन्तोषजनक नहीं रहा।

(vi) अध्यापकों की पूर्ण स्थिति ओर शैक्षणिक परिवर्तन आपस में सही ढंग से मेल नहीं रख सके।

3. **एस. सवाहीला, पठान,** (1988) ने पुणे शहर के माध्यमिक स्कूलों में कुछ सह शिक्षण स्कूल और एकल लिंग स्कूलों के प्रति अध्यापकों, विद्यार्थियों, प्रबन्धकों और अभिभावकों के दृष्टिकोण का अध्ययन किया।
इस अध्ययन के उद्देश्य निम्न थे:–

(i) लड़के, लडकियों या सहशिक्षा वाले स्कूलों, के प्रति बच्चों, पुरूषों अध्यापकों, महिला अध्यापकों, प्रबन्धकों और अभिभावकों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।

(ii) एकल लिंग ओर सह–शिक्षण स्कूलों में शिक्षा, अनुशासन और संयुक्त वर्ग के सम्बन्ध में बच्चों के दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन करना।

इस अध्ययन में शहर के कैम्प क्षेत्र व शहरी क्षेत्र क्षेत्र में स्थापित स्कूलों के निदर्शन लिये गए। इसमें अंग्रेजी माध्यम स्कूलों के 180 लड़के और 180 लड़कियों, 17 पुरूष अध्यापक व 73 महिला अध्यापक एक लिंग व सहशिक्षण स्कूलों से शामिल किया गया। अध्ययन के लिए संख्या के सम्बन्ध में प्रश्नावली तैयार की गई। माध्यमान प्रामाणिक विचलन, टी वेल्यू का प्रयोग आंकड़ों के विभाजन में किया गया।
इस अध्ययन में पाया कि:–

(i) 24 प्रतिशत अध्यापक सह शिक्षा के पक्ष में और 26 प्रतिशत विपक्ष में थे। 68 प्रतिशत छात्र सह शिक्षा के पक्ष में व 32 प्रतिशत छात्र सहशिक्षा के विपक्ष में पाए गए।

(ii) अंग्रेजी माध्यम वाले स्कूलों के विद्यार्थियों का नजरिया एकल लिंग स्कूलों की बजाय सह शिक्षा वाले स्कूलों के प्रति अच्छा था।

(iii) सह–शिक्षा स्कूलों के लड़के व लड़कियों की जब एकल लिंग स्कूल के बच्चों के साथ तुलना की गई तो उनका दृष्टिकोण भिन्न पाया गया।

योजना और विधि

कोई भी शोध कार्य मनमाने ढंग से नहीं किया जा सकता है। प्रत्येक शोध कार्य को योजनाबद्ध तरीके से करना पड़ता है। योजनाबद्ध कार्य क्रमबद्ध होता है। योजना निर्माण के समय कार्य के उद्देश्य, उन्हें

IJRSSH

क्रियान्वित करने की विधियां, मार्ग में आने वाली संभावित बाधाओं तथा उनके निराकरण आदि के उपायों के बारे में पहले ही विस्तार से विचार किया जाता है।

हकसले के अनुसार:

''अविवेकपूर्णता गलती से ज्यादा नुकसानदायक हो सकती है।''

योजना और कार्य करने की रीति का महत्वपूर्ण अंग है। उचित विचार और योजना के बिना कोई भी अनुसंधान कार्य नहीं किया जा सकता। किसी भी समस्या का चाहे वह शैक्षिक या वैज्ञानिक हो उसका आंकड़ों के आधार पर ही समाधान किया जा सकता है क्योंकि आंकड़े कच्चे माल के समान होते हैं। जिनके बिना अनुसंधान का उत्पादन असंभव है।

वर्तमान अध्ययन ''गंगानगर जिले के घडसाना क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की प्रशासकीय, व्यक्तिगत, एवं शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन'' का प्रयत्न किया गया है। यह अध्ययन अध्यापकों की समस्याओं से प्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धित है। इसलिए यह जरूरी है कि वे अध्यापक जो माध्यमिक कक्षाओं को पढ़ा रहे हैं। उनके विचार इस समस्याओं के विषय में लिए जाए।

3.1 अनुसंधान विधि:

अनुसंधान की विधि का प्रयोग विषय और समस्या की प्रवृति के अनुसार किया जाता है। अनुसंधान विधि अनेक प्रकार की होती हैं। जिसमें ऐतिहासिक, प्रयोगात्मक एवं सर्वेक्षण विधि प्रमुख है। प्रस्तुत शोध कार्य के परिणाम प्राप्त करने के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

3.2 जनसंख्या और न्यादर्श:

जनसंख्या शब्द अनुसंधान में प्रयोग किया जाता है और इसका प्रयोग लोगों के एक वर्ग, जिसमें अनुसंधान तथा अनुसंधानकर्ता संबंधित है की व्याख्या करने के लिए प्रयोग में लाया जाता है। क्योंकि अनुसंधान में पूरी जनसंख्या को लेना संभव नहीं इसलिए जनसंख्या का एक चुना हुआ हिस्सा लिया जाता है। जिसे तकनीकि दृष्टि से न्यादर्श कहा जाता है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

आँकड़ों का सही विश्लेषण एवं व्याख्या अनुसंधान कार्य का आधार स्तम्भ होता है। विविध उपकरणों के माध्यम से एकत्रित किए गए आंकड़ें चाहे कितने ही उपयुक्त क्यों न हो तो भी वे अव्यवस्थित ही होते है। इनको प्रयोजनशील एवं सुसंगठित अर्थात सम्पादित, वर्गीकत एवं सारणीबद्ध करने की आवश्यकता होती है। तत्पश्चात् आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या की जाती है। विश्लेषण की समस्त प्रक्रिया में प्राप्त आंकड़ों की इस तरह से व्यवस्थित अर्थात उनका वर्गीकरण करते है कि वह समस्या के सम्बन्ध में वांछित परिणामों को प्रस्तुत

IJRSSH

कर सकें। वर्गीकरण से अभिप्राय है कि तथ्यों को उनकी समानता एवं असमानता के आधार पर अलग–अलग समूहों में बांट लिया जाए।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में आंकड़ों को योग रूप में ही प्रदर्शित किया गया है। प्रश्नानुसार विश्लेषण से व्याख्या तालिकाओं में दर्शायी गयी है।

भाग : क

अध्यापकों की प्रशासकीय समस्याएं

तालिका 4.1 आपको वेतन सही समय पर मिलता है?

क्रमांक	प्रतिक्रिया	अध्यापकों की संख्या	प्रतिशत (:)
1	हां	90	90
2	नहीं	10	10
	योग	100	100

तालिका 4.1 से यह स्पष्ट होता है कि 90 : अध्यापकों का मानना है कि उन्हें वेतन सही समय पर मिलता है जबकि 10: अध्यापकों का मानना है कि उन्हें वेतन सही समय पर नहीं मिलता है।

तालिका नं: 4.2 विद्यालय वेतन आपके पारिवारिक व्यय के अनुसार उचित है?

क्रमांक	प्रतिक्रिया	अध्यापकों की संख्या	प्रतिशत (:)
1	हां	75	75
2	नहीं	25	25
	योग	100	100

तालिका 4.2 के अध्ययन से पता चलता है कि 75: अध्यापकों का कहना है कि विद्यालय वेतन उनके पारिवारिक व्यय के अनुसार उचित है जबकि 25: अध्यापकों का कहना है कि विद्यालय वेतन उनके पारिवारिक व्यय के अनुसार उचित नहीं है।

तालिका नं 4.3

आपको वार्षिक वेतन वृद्धि मिलती है?

क्रमांक	प्रतिक्रिया	अध्यापकों की संख्या	प्रतिशत (:)
1	हां	88	88
2	नहीं	12	12
	योग	100	100

IJRSSH

तालिका नं. 4.3 को देखने यह पता चलता है कि 88: अध्यापक इस बात से सहमत है कि उन्हें वार्षिक वेतन वृद्धि मिलती है जबकि 12: अध्यापकों का कहना है कि उन्हें वार्षिक वेतन वृद्धि नही मिलती है।

तालिका नं 4.4

आपके विद्यालय में बचत योजना लागू है?

क्रमांक	प्रतिक्रिया	अध्यापकों की संख्या	प्रतिशत (:)
1	हां	78	78
2	नहीं	22	22
	योग	100	100

तालिका नं 4.4 के अध्ययन से यह पता चलता है कि 78 : अध्यापक यह कहते है कि उनके विद्यालय में बचत योजना लागू है जबकि 22 : अध्यापकों का कहना है कि उनके विद्यालय में बचत योजना लागू नहीं है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. अग्रवाल, वाई. पी., स्टैटिक्ल मैथड्स, स्टरलिंग पब्लिशर्ज, नई दिल्ली–1995
2. ईबेल, आर. एल., एसैसियल ऑफ एजुकेशनल मेजरमैन्ट, पैन्टिश हाल ऑफ इन्डिया प्रा. लि. मि. नई दिल्ली–1991
3. कपिल, एच. के. अनुसंधान विधियां, प्रसाद भार्गव आगरा–1989
4. कपिल, एच. के. सांख्यिकी के मूल तत्व, आईकन कम्पयूटर आगरा–2005
5. कौल, लोकेश शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, विकास पब्लिशर्ज, नई दिल्ली–1998
6. कुमारी, प्रवीण ''जिला सिरसा के राजकीय प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन'' एम. एड. डिजर्टेशन– कु. युनि.–1995
7. चौधरी, सुरेश ''पानीपत क्षेत्र के कुछ प्राईमरी विद्यालयों की समस्याओं का अध्ययन'' एम. एड. डिजर्टेशन– कु. युनि.–1994
8. भाटिया, के. के. मॉडर्न इण्डियन एजूकेशन एण्ड़ इट्स प्रॉबलम
9. भारत सरकार दी कान्सटीट्रीयुशन ऑफ इण्डिया दी मैनेजर पब्लिकेशन, नई दिल्ली–1970
10. श्रीवास्तव, डी.एन. अनुसंधान विधियां, साहित्य, प्रकाशन, आगरा–2000
11. सचदेवा, हुडा एस. के., निवेदिता 'माध्यमिक शिक्षा एवं स्कूल प्रबन्ध, विजय पब्लिकेशन, लुधियाना

IJRSSH